Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – I

भाग – 1

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL – 1

CONTENTS

हिन्दी

1.	वर्ण विचार	1
2.	वर्ण विश्लेषण	4
3.	शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण)	7
4.	हिन्दी भाषा में शब्दों का मानकीकरण	10
5.	तत्सम – तद्भव	13
6.	देशज शब्द	15
7.	उपसर्ग	17
8.	प्रत्यय	20
9.	संधि	24
10.	समास	41
11.	संज्ञा	50
12.	सर्वनाम	55
13.	विशेषण	57
14.	क्रिया	58
15.	अव्यय/अविकारी शब्द	60
16.	पर्यायवाची	64
17.	विलोम शब्द	67
18.	वाक्य के लिए एक शब्द	75
19.	शब्द युग्म	81
20.	एकार्थी शब्द	92
21.	वर्तनी शुद्धि	99
22.	वाक्य	103
23.	पद बंध	105

24.	पद परिचय	108
25.	वचन	111
26.	लिंग	114
27.	काल	119
28.	विराम चिह्न और उनके प्रयोग	122
29.	कारक एवं विभक्ति	126
30.	काव्य में भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य, शिल्प सौन्दर्य, नाद सौन्दर्य, जीवन दृष्टि की पहचान	132
31.	राजस्थानी शब्दों के हिन्दी रूप	136
32.	राजस्थानी मुहावरे व लोकोक्तियाँ	145
33.	मुहावरे	155
34.	लोकोक्ति	165

हिन्दी भाषा शिक्षण

1.	हिन्दी शिक्षण	179
2.	हिन्दी शिक्षण विधि	184
3.	भाषा शिक्षण के उपागम	209
4.	भाषा दक्षता का विकास	212
5.	भाषा कौशल	215
6.	भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ	223
7.	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	225
8.	भाषा शिक्षण में आंकलन, मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण	231
9.	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	239
10.	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	242

लेवल ।। के हिन्दी भाषा-1 के प्रतियोगियों के लिए

भाषा-।

- वर्ण विचार
- स्त्रोत के आधार पर शब्दों के वर्ग- तत्सम/तद्भव/देशज/विदेशी शब्द
- पर्यायवाची शब्द
- विलोम/विपरीतार्थक शब्द/प्रतिलोम
- एकार्थी शब्द
- उपसर्ग
- प्रत्यय
- संधि
- समास
- संज्ञा
- सर्वनाम
- विशेषण व विशेष्य
- अव्यय
- वाक्यांश के लिए एक शब्द
- लिंग, वचन एवं काल
- वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्यों के प्रकार तथा पदबन्ध
- विराम चिह्न
- शब्द शुद्धि
- राजस्थानी शब्दों के हिंदी रूप
- मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ
- भाषा शिक्षण की विधियाँ
- भाषा शिक्षण के उपागम
- भाषायी दक्षता का विकास
- भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना) का विकास तथा हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ
- शिक्षण अधिगम सामग्री - पाठ्यपुस्तक, बहुमाध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन
- उपलब्धि परीक्षण का निर्माण
- समग्र एवं सतत् मूल्यांकन
- उपचारात्मक शिक्षण
- अपठित गद्यांश: शब्द ज्ञान- तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशी शब्द, पर्यायवाची, विलोम, एकार्थी शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, विशेष्य, अव्यय, वाक्यांश के लिए एक शब्द, शब्द शुद्धि।
- अपठित गद्यांशः रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करना, वचन, काल व लिंग ज्ञात करना, दिए गए शब्दों का वचन, काल और लिंग बदलना, राजस्थानी शब्दों के हिंदी रूप

लेवल ।। के हिन्दी भाषा-2 के प्रतियोगियों के लिए

भाषा-।।

- वर्ण विचार एवं शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखना
- स्त्रोत के आधार पर शब्दों के वर्ग- तत्सम/तद्भव/देशज/विदेशी शब्द
- उपसर्ग
- प्रत्यय
- संधि
- समास
- संज्ञा
- सर्वनाम
- विशेषण
- अव्यय व क्रिया विशेषण
- लिंग, वचन एवं काल
- वाक्य रचना, वाक्य के अंग, वाक्यों के भेद व पदबन्ध
- विराम चिह्न
- युग्म शब्द
- कारक चिह्न
- क्रिया
- वर्ण विश्लेषण
- शब्दों के मानक रूप
- राजस्थानी मुहावरों का अर्थ एवं प्रयोग
- मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ
- भाषा शिक्षण की विधियाँ
- भाषा शिक्षण के उपागम
- भाषायी दक्षता का विकास
- भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना व लिखना) का विकास तथा हिन्दी भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ
- शिक्षण अधिगम सामग्री पाठ्यपुस्तक, बहुमाध्यम एवं शिक्षण के अन्य संसाधन
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना)
- उपलब्धि परीक्षण का निर्माण
- समग्र एवं सतत् मूल्यांकन
- उपचारात्मक शिक्षण
- अपठित गद्यांशः वर्ण विचार, वर्ण विश्लेषण, शब्द ज्ञान- तत्सम, तद्भव, देशज व विदेशी शब्द, युग्म शब्द, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखना, शब्दों के मानकरूप लिखना, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, क्रिया, लिंग, वचन एवं काल
- अपठित पद्यांशः भाव सौंदर्य, विचार सौंदर्य, नाद सौंदर्य, शिल्प सौंदर्य, जीवन दृष्टि

समास

- समास शब्द का अर्थ – संक्षिप्त या छोटा करना है।
- दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
- इस मेल में विभक्ति चिह्नों का लोप होता है।
- समास शब्द 'सम् + आस' के योग से बना है।
  यहाँ 'सम्' का अर्थ – समीप
  एवं 'आस' का अर्थ – बैठना
  अर्थात् दो या दो से अधिक पदों का पास–पास आकर बैठ जाना या आपस में मिल जाना ही समास कहलाता है।
  जैसे – गौ के लिए शाला – गौशाला
- इस प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से विभक्ति चिह्नों के कारण जो नवीन शब्द बनते हैं उन्हें सामासिक या समस्त पद कहते हैं।
- सामासिक शब्दों का संबंध व्यक्त करने वाले विभक्ति चिह्नों आदि के साथ प्रकट करने या लिखने वाली रीति को 'विग्रह' कहते हैं।
  जैसे – 'धनसंपन्न' समस्त पद का विग्रह 'धन से संपन्न'
  'रसोईघर' समस्त पद का विग्रह 'रसोई के लिए घर'
- समस्त पद में मुख्यतः दो पद होते हैं – पूर्वपद व उत्तरपद।
  पहले वाले पद को 'पूर्वपद' व दूसरे पद को 'उत्तरपद' कहते हैं।

समस्त पद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास विग्रह
पूजा घर	पूजा	घर	पूजा के लिए घर
माता–पिता	माता	पिता	माता और पिता
नवरत्न	नव	रत्न	नौ रत्नों का समूह
हस्तगत	हस्त	गत	हस्त में गया हुआ
रसोई घर	रसोई	घर	रसोई के लिए घर

समस्त पद एवं समास विग्रह – दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में जोड़ देना ही समस्त पद या समास होता है व आपस में जुड़े हुए शब्दों को तोड़ना या अलग करना समास विग्रह कहलाता है।
समास विग्रह करते समय 'मूल' शब्द का ही प्रयोग होता है।

नोट –
पर्यायवाची शब्द को समास विग्रह में उपयोग मे नहीं लिया जाता है।

क्र.सं.	समास या समस्त पद	समास विग्रह
1.	यथा समय	समय के अनुसार
2.	बेखबर	बिना खबर के
3.	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
4.	यशप्राप्त	यश को प्राप्त

समास के भेद – एक समास में कम से कम दो पदों का योग अवश्य होता है।
समास के उन दो पदों में से किसी एक पद का अर्थ प्रमुख होता है। अर्थ की इसी प्रधानता के अनुसार समास के प्रमुखतः चार भेद होते हैं।

उनकी प्रधानता अथवा अप्रधानता के विभागत्व के अनुसार ये भेद किए गए हैं।

1. जिस समास में पहला शब्द प्रायः प्रधान होता है, उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।
2. जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है, उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं।
3. जिस समास में दोनो शब्द प्रधान होते हैं, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।
4. जिस समास में कोई भी शब्द प्रधान नहीं होता है उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

समास के प्रमुख भेद इस प्रकार है–

1. पहला पद प्रधान – अव्ययीभावी समास
2. दूसरा पद प्रधान – तत्पुरुष समास

कर्मधारय समास | द्विगु समास

नोट –

कर्मधारय व द्विगु समास दोनों में द्वितीय पद ही प्रधान होता है।
अतः इन दोनों समासों को मुख्य भेदों में शामिल न कर इन दोनों को तत्पुरुष समास के उपभेदों में शामिल किये जाते हैं।

3. दोनों पद प्रधान – द्वंद्व समास
4. अन्य पद प्रधान – बहुव्रीहि समास

1. **अव्ययीभाव समास** – इस समास में परिवर्तनशीलता का भाव होता है और उस अव्यय पद का का रूप, लिंग, वचन, कारक में नहीं बदलता है व सदैव एकसा रहता है व पहला पद प्रधान होता है। इस समास में प्रथम पद कोई उपसर्ग या अव्यय शब्द होता है व इस समास में एक पद का भी प्रायः दोहराव होता रहता है लेकिन ज्ञात रहे यदि दोहराव वाले पद में युद्धवाचक अर्थ (योद्धा) प्रकट हो रहा हो तो वहाँ पर बहुव्रीहि समास माना जाता है।

उदाहरण

	समस्त पद	**विग्रह**
1.	बेखबर	बिना खबर के
2.	प्रतिदिन	हर दिन
3.	भरपेट	पेट भरकर
4.	आजन्म	जन्म से लेकर
5.	आमरण	मरणतक
6.	यथासमय	समय के अनुसार
7.	प्रत्याशा	आशा के बदले आशा
8.	प्रतिक्षण	हर क्षण
9.	बेवजह	वजह से रहित

अपवाद – हिंदी के कई ऐसे शब्द या समस्त पद जिनमें कोई शब्द अव्यय नहीं होता है परन्तु समस्त पद अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है वहाँ भी अव्ययीभाव समास माना जाता है–

जैसे –

घर – घर	घर के बाद घर
रातों रात	रात ही रात में

अव्ययीभाव समास के प्रमुख नियम

आ/यावत, यथा, प्रति, बा/स, बे/ला/निस्/निर्/नि आदि उपसर्ग होने पर–

1. ''मूल शब्द + तक''
   जैसे – आजीवन – जीवन रहने तक
2. ''मूल शब्द + के अनुसार''
   जैसे – यथायोग्य – योग्यता के अनुसार
3. ''हर + मूल शब्द''
   जैसे – प्रतिपल – हर पल
4. ''मूल शब्द + के सहित''
   जैसे – सशर्त – शर्त के सहित
5. ''मूल शब्द + से रहित''
   जैसे – बेशर्म – शर्म से रहित

अकारण	बिना कारण के
अनजाने	बिना जानकर
यथास्थिति	जैसी स्थिति है
यथामति	जैसी मति है
यथा विधि	जैसी विधि निर्धारित है
नगण्य	न गण्य

2. तत्पुरुष समास – इस समास में पहला पद गौण व दूसरा पद प्रधान होता है।
इस समास में कारक के विभक्ति चिह्नों का लोप हो जाता है (कर्ता व संबोधन कारक को छोड़कर) इसलिए छह कारकों के आधार पर इस समास के 6 भेद हैं–

(i) कर्म तत्पुरुष समास – इस समास में 'को' विभक्ति चिह्नों का लोप रहता है।

जैसे

ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ
आपत्तिजनक	आपत्ति को जन्म देने वाला
आत्मविस्मृत	आत्म को विस्मृत
सर्वप्रिय	सर्व को प्रिय
यशप्राप्त	यश को प्राप्त
पदप्राप्त	पद को प्राप्त
आदर्शोन्मुख	आदर्श को उन्मुख
शरणागत	शरण को आया हुआ
ख्यातिप्राप्त	ख्याति को प्राप्त
क्रमागत	क्रम को आगत

(ii) करण तत्पुरुष समास – इस समास में समास विग्रह करने पर 'से' चिह्न का लोप होता है व 'के द्वारा' का भी लोप होता है।

जैसे

भावपूर्ण	भाव से पूर्ण
बाणाहत	बाण से आहत
अभावग्रस्त	अभाव से ग्रस्त
हस्तलिखित	हस्त से लिखित
बाढ़ पीड़ित	बाढ से पीड़ित
गुणयुक्त	गुण से युक्त
चिंताव्याकुल	चिंता से व्याकुल
ईश्वरदत्त	ईश्वर द्वारा दत्त
आँखों देखी	आँखों द्वारा देखी हुई

(iii) संप्रदान तत्पुरुष समास – इस समास में 'के लिए' चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा
राहखर्च	राह के लिए खर्च
बालामृत	बालकों के लिए अमृत
युद्धभूमि	युद्ध के लिए भूमि
कर्णफूल	कर्ण के लिए फूल
विद्यालय	विद्या के लिए आलय
घुड़साल	घोड़ो के लिए साल
महँगाई – भत्ता	महँगाई के लिए भत्ता
छात्रावास	छात्राओं के लिए आवास
सभाभवन	सभा के लिए भवन
रोकड़बही	रोकड़ के लिए बही
हवन कुण्ड	हवन के लिए कुण्ड
हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री
विद्युत्गृह	विद्युत् के लिए गृह
समाचार पत्र	समाचार के लिए पत्र

(iv) अपादान तत्पुरुष समास – इस समास में 'से' पृथक या अलग के लिए चिह्न का लोप होता है।

जैसे –

अवसरवंचित	अवसर से वंचित
देशनिकाला	देश से निकाला
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त
पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
कामचोर	काम से जी चुराने वाला
कर्त्तव्य विमुख	कर्त्तव्य से विमुख
जन्मांध	जन्म से अंधा
गुणातीत	गुणों से अतीत
ऋणमुक्त	ऋण से मुक्त
आशातीत	आशा से अतीत
गुणरहित	गुण से रहित
गर्वशून्य	गर्व से शून्य
जन्मरोगी	जन्म से रोगी
जातबाहर	जाति से बाहर
जलरिक्त	जल से रिक्त

(v) संबंध तत्पुरुष समास – यह समास का, के, की लोप से बनने वाला समास है।

जैसे –

गंगाजल	गंगा का जल
नगरसेठ	नगर का सेठ
आत्महत्या	आत्म की हत्या
कार्यकर्ता	कार्य कर कर्ता
गोमुख	गो का मुख
मतदाता	मत का दाता
राजमाता	राजा की माता
जलधारा	जल की धारा

Toppersnotes Unleash the topper in you

पथपरिवहन	पथ का परिवहन
भूकंप	भू का कंप
मंत्रिपरिषद्	मंत्रियों की परिषद्
मृत्युदंड	मृत्यु का दंड
रक्तदान	रक्त का दान
विद्यार्थी	विद्या का अर्थी
शांतिदूत	शांति का दूत

(vi) अधिकरण तत्पुरुष समास – इस समास में 'में' 'पर' चिह्नों का लोप होता है।

जैसे –

जलमग्न	जल में मग्न
कर्मनिष्ठ	कर्म में निष्ठ
आपबीती	आप पर बीती
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
सिरदर्द	सिर में दर्द
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
ग्रामवासी	ग्राम मे वास करने वाला
जलयान	जल पर चलने वाला यान
जलपोत	जल पर चलने वाला पोत
गंगास्नान	गंगा में स्नान
कार्य कुशल	कार्य में कुशल
कलानिपुण	कला में निपुण
आत्मविश्वास	आत्म पर विश्वास
ईश्वराधीन	ईश्वर पर अधीन
अश्वारूढ	अश्व पर आरूढ

नञ् तत्पुरूष समास – यदि किसी सामासिक पद में प्रथम पद के रूप में अ/अन/अन् /न/ना उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तथा यह उपसर्ग मूल शब्द को विलोम शब्द के रूप में परिवर्तित कर रहे हो तो वहाँ पर नञ् तत्पुरुष समास कहते हैं।
इस समाज का विग्रह करते समय उपसर्ग को हटाकर 'न' शब्द जोड़ दिया जाता है।

जैसे –

अज्ञान	न ज्ञान
अनन्त	न अन्त
नालायक	न लायक
अनमोल	न मोल

3. द्विगु समास – इस समास का पहला पद संख्यावाचक अर्थाव् गणना बोधक होता है व दूसरा पद प्रधान होता है, क्योंकि इसमें बहुदा यह जाना जाता है कि इतनी वस्तुओं का समूह है।

इस समास के पदों का विग्रह करते समय दोनो पदों को लिखकर अन्त में का समूह/समाहार पद जोड़ दिया जाता हैं।

समस्त पद	विग्रह
1. नवरत्न	नौ रत्नो का समूह
2. अठवाड़ा	आठ दिनों का समूह
3. द्विगु	दो गौओ का समूह
4. शताब्दी	सौ अब्दों (वर्षो) का समूह
5. त्रिभुज	तीन भुजाओ का समूह
6. चौराहा	चार राहों का संगम
7. पंचरात्र	पंच रात्रियों का समूह
8. त्रिमूर्ति	तीन मूर्तियों का समूह
9. तिकोना	तीन कोनों का समूह
10. सिपाही	सि (तीन) पैरों का समूह
11. एकतरफ	एक ही तरफ है जो
12. अष्टधातु	आठ धातुओं का समूह
13. त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह
14. शतक	सौ का समूह
15. चौबारा	चार द्वार वाला भवन

अपवाद –

पक्षद्वय	दो पक्षो का समूह
लेखकद्वय	दो लेखकों का समूह
संकलनत्रय	तीन संकलनो का समूह

4. **कर्मधारय समास –** इस समास के पहले व दूसरे पद में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान उपमेय का संबंध होता है।

इस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है।

इस समास को समानाधिकरण तत्पुरुष कहते है।

(i) विशेषण विशेष्य

समस्त पद	विग्रह
महापुरुष	महान् है जो पुरुष
पीतांबर	पीला है जो अंबर
प्राणप्रिय	प्रिय है जो प्राणों को
नीलगगन	नीला है जो गगन
नीलकमल	नीला है जो कमल
महात्मा	महान् है जो आत्मा
श्वेतवस्त्र	श्वेत है जो वस्त्र
नीलोत्पल	नीला है जो उत्पल (कमल)

(ii) उपमान– उपमेय युक्त पद	विग्रह
चंद्रवदन	चंद्रमा के समान वदन
भवसागर	भवरूपी सागर
विद्याधन	विद्यारूपी धन
मृगनयनी	मृग के समान नेत्र वाली
पादार विन्द	अरविन्द के समान हैं जो पाद
चंद्रमुख	चंद्र के समान है जो मुख

(iii) रूपक आलांकारिक युक्त पद	**विग्रह**
मनमंदिर	मनरूपी मंदिर
ताराघट	तारारूपी घट
शोकसागर	सागर रूपी शोक

(iv) सु/कु उपसर्ग से बने पद	**विग्रह**
सुपुत्र	सुष्ठु है जो पुत्र
सुमार्ग	सुष्ठु है जो मार्ग
कुमति	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	कुत्सित है जो पुत्र

5. द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद समान रूप से प्रधान होते हैं।
इसके दोनों पद योजक – चिह्न द्वारा जुड़े होते हैं व समास विग्रह करने पर 'और', 'या' 'अथवा' तथा 'एवं' आदि लगते हैं।
इस समास के मुख्यतः तीन भेद होते है–

द्वन्द्व समास

इतरेतर द्वन्द्व समास | समाहार द्वन्द्व समास | एकशेष द्वन्द्व समास

(i) इतरेतर द्वन्द्व समास – इस समास में दो शब्दों का अर्थ होता है व दोनों पद प्रधान होते हैं, साथ में दोनों शब्दों का अर्थ भी अलग–अलग होता है।

अन्न–जल	अन्न और जल
आयात – निर्यात	आयात और निर्यात
दम्पती	दम् (पत्नी) और पति
दूध–रोटी	दूध और रोटी
देश– विदेश	देश और विदेश
दाल–रोटी	दाल और रोटी

(ii) समाहार द्वन्द्व समास – इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं व दोनों शब्दों का अर्थ दो या दो से अधिक होता है।

आगा – पीछा	आगा, पीछा आदि
कंकर – पत्थर	कंकर, पत्थर आदि
रोक – टोक	रोक, टोक आदि
चाय – पानी	चाय, पानी आदि
खाना – पीना	खाना, पीना आदि
चलता – फिरता	चलता, फिरता,
धल – दौलत	धन, दौलत आदि

नोट – एक से 10 तक की संख्याओ का छोड़कर व 10 से भाज्य संख्या को छोड़कर अन्य सभी संख्यावाची शब्दों में समाहार द्वन्द्व समास होगा।

सैंतीस	–	सात और तीस का समाहार
चौबीस	–	चार और बीस का समाहार
तिरासी	–	तीन और अस्सी का समाहार

(iii)एकशेष द्वन्द्व समास – इस समास में विग्रह करने पर तो कई पद होते हैं, परन्तु समस्त पद बनाते समय किसी एक को ही ग्रहण किया जाता है।

सुख–दुःख	सुख या दुःख
आज – कल	आज या कल
हानि – लाभ	हानि या लाभ
गमनागमन	गमन या आगमन
गुण – दोष	गुण या दोष

6. **बहुव्रीहि समास –** इस समास में पूर्वपद व उत्तरपद दोनों ही गौण होते हैं व अन्य पद प्रधान होता है व शाब्दिक अर्थ को छोड़कर एक नया अर्थ निकलता है।
जैसे – लंबोदर – लंबा है उदर (पेट) जिसका इस शब्द में दोनों पदों का अर्थ प्रधान न होकर अन्यार्थ 'गणेश' शब्द प्रधान है।

समस्त पद	**समास विग्रह**
घनश्याम	घन जैसा श्याम अर्थात् कृष्ण
नीलकंठ	नीला कंठ है जिसका अर्थात् शिव
दशमुख	दश मुख हैं जिसके अर्थात् रावण
महावीर	महान् है जो वीर अर्थात् हनुमान
हंसवाहिनी	हंस है वाहन जिसका अर्थात् सरस्वती
वज्रपाणि	वज्र है पाणी में जिसके वह (इन्द्र)
चन्द्रमुखी	चन्द्र के समान है जिसका मुख (सुंदर स्त्री)
गजानन	गज के समान आनन वाला अर्थात् गणेश
दिंगबर	दिशा ही है अंबर जिसका अर्थात् शिव

प्रायः कुछ समासों में एक ही साथ अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं, ऐसी स्थिति सर्वप्रथम बहुव्रीहि समास का ही चयन करें। ज्ञात रहे यदि बहुव्रीहि समास न हो तब हम अन्य समास का चयन कर सकते हैं।

कर्मधारय व बहुव्रीहि समास में अन्तर

कर्मधारय समास में दोनों पदों में विशेषण व विशेष्य व उपमान व उपमेय का संबध होता है, लेकिन बहुव्रीहि समास में दोनो पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद प्रधान होता है।

मृगनयन	मृग के समान नयन (कर्मधारय)
नीलकंठ	वह जिसका कंठ नीला है (शिव) – बहुव्रीहि
	बहुव्रीहि / कर्मधारय
पीताम्बर	बहुव्रीहि / कर्मधारय
पंचवटी	द्विगु / तत्पुरुष
चौमासा	बहुव्रीहि / द्वन्द्व
गजानन	बहुव्रीहि / तत्पुरुष
मनोज	बहुव्रीहि / तत्पुरुष (उपपद)
दशानन	बहुव्रीहि / द्विगु

बहुव्रीहि व द्विगु समास में अन्तर

1. **द्विगु समास –** इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है व समस्त पद समूह का बोध प्रकट करता है।
जैसे–
चौराहा – चार राहों का समूह

2. **बहुव्रीहि समास** – इस समास में पहला पद संख्यावाची होता है लेकिन समस्त पद से समूह का बोध न होकर अन्य अर्थ का बोध कराता है।
जैसे–
चतुर्भुज – चार हैं भुजाएँ जिसके (विष्णु)
तिरंगा – तीन हैं रंग जिसमें वह (राष्ट्रध्वज)

समस्त पद	**विग्रह**
प्रधानमंत्री	मंत्रियों मे प्रधान है जो
निर्भय	जो व्यक्ति किसी से भय नहीं खाता हो
अनन्त	अन्त नही जिसका
चक्रधर	चक्र को धारण करने वाला (विष्णु)
अनहोनी	न होने वाली घटना
चंद्रमौली	चंद्र है मौलि पर जिसके (शिव)
सुहासिनी	सुंदर है हंसी जिसकी वह (भारतमाता)
सुकेशी	सुदंर केश (किरणें) हैं जिसकी (चाँद)
कुरूप	असुन्दर रूप वाला
मीनाक्षी	मीन के समान हैं अक्षि जिसका (सुंदर स्त्री)
चन्द्रशेखर	शेखर पर चन्द्र है जिसके (शिवजी)
खगेश	खगों का ईश (गरूड़)
जितेंद्रिय	जीती हैं जिसने इंद्रियाँ (कामना रहित)
अल्पबुद्धि	अल्प है बुद्धि जिसकी (व्यक्ति विशेष)
पीताम्बर	पीत अम्बर (वस्त्र) वाला (श्री कृष्ण)
पतझड़	झड़ते हैं पत्ते जिसमें (ऋतु विशेष)
षडानन	षड (छः) है आनन (मुख) जिसके (कार्तिकेय)
बहुमान	वह व्यक्ति जिसका बहुत मान हो
निरभिमान	वह व्यक्ति जिसमें अभिमान न हो
निर्लेप	किसी वस्तु या विषय में आसक्त न होने वाला विशेष
मयूरवाहन	मयूर की सवारी है जिसकी (कार्तिकेय)
निराधार	वह व्यक्ति जिसे कोई सहारा प्राप्त न हो।
पंकज	पंक में पैदा हो जो (कमल)
निर्भ्रम	जिस व्यक्ति के / में कोई भ्रम न हो।
कलमुँहा	काला है मुँह जिसका (लांछित व्यक्ति)
आनाकानी	ना करना – टालमटोल करना।

संज्ञा

परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
  जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

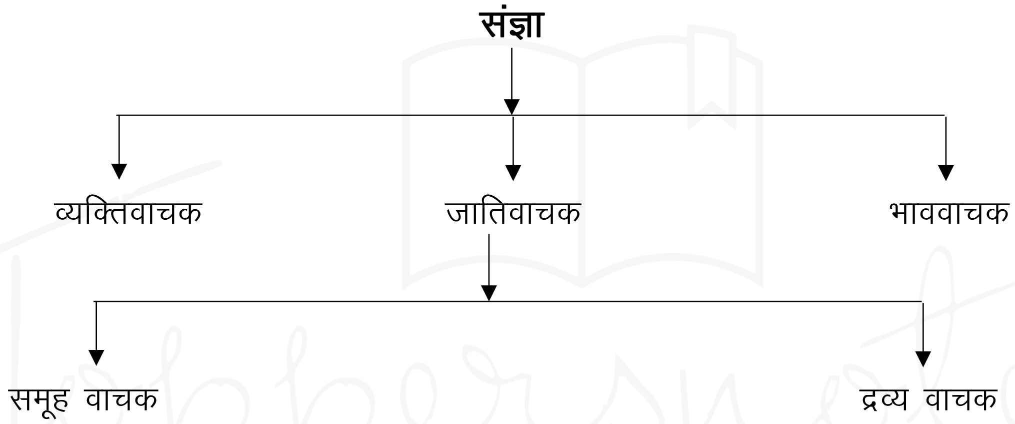

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा –** जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
प्रशान्त महासागर	महासागर
भारत, राजस्थान	देश, राज्य
रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी	इतिहासकार, कवि
रामायण, ऋग्वेद	ग्रंथ, वेद
अजय की भैंस	भदावरी, मुर्रा
हनुमानगढ, नोहर	जिला, उपखण्ड
ग्राण्ड ट्रंक रोड़	रोड़, सड़क

3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

- प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
- भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
  1. जातिवाचक संज्ञा से
  2. सर्वनाम से
  3. विशेषण से
  4. क्रिया से
  5. अव्यय से

जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बच्चा	बचपन
शिशु	शैशव
ईश्वर	ऐश्वर्य
विद्वान	विद्वता
व्यक्ति	व्यक्तित्व
मित्र	मित्रता
बंधु	बंधुत्व
पशु	पशुता
बूढ़ा	बुढापा
पुरूष	पुरूषत्व
दानव	दानवता
इंसान	इंसानियत
सती	सतीत्व
लड़का	लड़कपन
आदमी	आदमियत
सज्जन	सज्जनता
गुरु	गौरव
चोर	चोरी
ठग	ठगी

विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
बहुत	बहुतायत
न्यून	न्यूनता
कठोर	कठोरतर
वीर	वीरता
विधवा	वैधव्य
मूर्ख	मूर्खता
चालक	चालाकी
निपुण	निपुणता
शिष्ट	शिष्टता
गर्म	गर्मी
ऊँचा	ऊँचाई
आलसी	आलस्य
नम्र	नम्रता
सहायक	सहायता
बुरा	बुराई
चतुर	चतुराई
मोटा	मोटापा
शूर	शौर्य / शूरत
स्वस्थ	स्वास्थ्य
सरल	सरलता
मीठा	मिठास
आवश्यक	आवश्यकता
निर्बल	निर्बलता
हरा	हरियाली
काला	कालापन / कालिमा
छोटा	छुटपन
दुष्ट	दुष्टता

क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बिकना	बिक्री
गिरना	गिरावट
थकना	थकावट
खेलना	खेल
हारना	हार
भूलना	भूल
पहचानना	पहचान
खेलना	खेल
सजाना	सजावट
लिखना	लिखावट
जमना	जमाव
पढ़ना	पढ़ाई
हंसना	हँसी
भूलना	भूल
उड़ना	ऊड़ान

अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
उपर	उपरी
समीप	सामीप्य
दूर	दूरी
धिक्	धिक्कार
निकट	निकटता
शीघ्र	शीघ्रता
मना	मनाही

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण   वि + आ + कृ + अन
  कारण   कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – दूध, धी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, आक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।
   नोट – जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।

आजाद – भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।
सरदार – सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
गाँधी – गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  जैसे –

गरीब	गरीबों
बड़ा	बड़ों
अमीर	अमीरों